श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर (सातबीस मंदिर) चित्तौड़गढ़ किला

चित्तौड़गढ़ जयपुर से 325 व उदयपुर से 110 किलोमीटर दूर है। यह राजस्थान का एक जिला मुख्यालय है। जिला मुख्यालय राजस्थान की राजधानी जयपुर व उदयपुर से रेल्वे व बस से जुड़ा है तथा उदयपुर तक वायुयान की भी सुविधा है। चित्तौड़गढ़ रेल्वे स्टेशन से 6 किलोमीटर दूर पहाड़ी के ऊपर स्थित है। चित्तौड़गढ़ (चित्रकूट) प्राचीनकाल में मेवाड़ की राजधानी रही है जो पूर्व में मझिमिका के नाम से जानी जाती है जिसका विस्तृत वर्णन इसी पुस्तक के मेवाड़-चित्तौड़ जैन धर्म के शीर्षक में वर्णित है। पुनः संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है

यह किला चौथी शताब्दी में मौर्यवंशी राजा चित्रांगन मौर्य द्वारा निर्मित है, इसीलिये इसका नाम चित्तौड़ रखा। आठवीं शताब्दी में गुहलवंशी राजा महेन्द्र (बाप्पारावल) ने इस पर विजय प्राप्त कर अपने अधिकार में लिया। बाद में 12वीं शताब्दी में सिद्धराज जयसिह के अधिकार में आ गया। यह अधिकार राजा कुमारपाल का रहा। कुमारपाल द्वारा अपने क्षैत्र के प्राणों की रक्षा करने वाले आलिक कुम्हार के नाम सात सौ ग्रामों का पट्टा दिया जिसमें चित्रकूट भी सम्मिलित होने का उल्लेख है, बाद में राजा कुमारपाल के भतीजे अजयपाल को गुहिलवंशी राजा समरसिंह ने हराकर पुनः वि. सं. 1231 में अपने अधिकार में लिया। गुहिलवंशी राजा की एक शाखा सिसोदिया भी थी, चित्तौड़ उनके अधिकार में रहा।

इस आदिनाथ भगवान के मंदिर का निर्माण 15वीं शताब्दी का उल्लेख है। लेकिन यह सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि यह सर्वेक्षण जानकार सूत्रों के आधार पर ही था जबकि – वि.सं. **1335** फाल्गुन 5 के दिन युवराज **अमरसिंह** की सानिध्य में इस मंदिर का ध्वजारोहण होने का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार महाराजा समरसिंह ने सं. **1353** में ग्यारह जिन प्रतिमाएं प्रतिष्ठित करने का उल्लेख है।

वि.सं. 1566 में जयदेव रचित तीर्थमाला में वि. सं. 1573 में हर्ष प्रमोद के शिष्य गयंदी द्वारा रचित तीर्थमाला में यहां (चित्तौड़) पर 32 जिन मंदिर (विभिन्न गच्छों के)

विद्यमान थे। इस मंदिर के लिए किवदन्ती है तथा साक्ष्य प्रमाण भी है कि बामनिया तलेसरा गौत्र की उत्पत्ति के इतिहास जो महात्माओं के पास उपलब्ध बही में है जिसका विस्तृत विवरण **करेड़ा (भूपालसागर) श्री पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर के लेख में उल्लेखित सम्वत् 1029 में प्रतिष्ठित होने का उल्लेख है।** उस समय आचार्य श्री यशोभद्र सूरि ने पांच स्थानों पर एक ही शुभ मुहूर्त पर प्रतिष्ठा कराई थी, **अतः इस मंदिर का निर्माण 1029 का माना जाकर एक हजार प्राचीन है।**

इसको सातबीस मंदिर भी कहते हैं। इसके दोनों ओर कुल 26 देव कुलिकाएं निर्मित हैं इसलिए इसको सातबीस कहा गया है। इसके शिखर व सभामण्डप का गुम्बज कलात्मक बना हुआ है, जिसको कला प्रेमी देखकर मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। गुम्बज में अप्सराएँ उत्कीर्ण हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। लांछण स्पष्ट नहीं है। इस पर सुमतिनाथ भगवान का नाम पेन्ट से लिखा है।
3. श्री सुविधिनाथ भगवान (मूलनायक

के बांए) की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 'सुविधिनाथ' उत्कीर्ण है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं एवं यंत्र :

1. श्री वासुपूज्य भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1501 मिगसर वदि 3 का लेख है।
2. श्री जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1181 उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा की बनावट मेवाड़ में वर्तमान उपलब्ध प्रतिमाओं में से कुछ भिन्न हैं।
3. श्री पद्मप्रभ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1532 ज्येष्ठ शुक्ला 3 का लेख है।
4. श्री सुमतिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1535 आषाढ़ शुक्ल 6 का लेख है।
5. श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
6. श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' गोलाकार है। इस पर कोई लेख नहीं है।
7. श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' x 4.5'' का है। इस पर संवत् 1904 माह सुद 10 का लेख है।
8. श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'' x 4'' का है। इस पर सं. 2059 भादवा शु0 प्रतिपदा का लेख है।
9. श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' x 3'' का है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

दोनों ओर के आलिए में :

1. श्री गौमुख यक्ष की स्थानीय पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1998 माघ सुदि 2 का लेख है।
2. श्री चक्रेश्वरी देवी की स्थानीय पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1998 माघ सुदि 2 का लेख है।

सभामण्डप (रंग मण्डप) में बाहर निकलते समय (बाएँ) – श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की पुरानी 37'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1484 वैशाख सुदि 2 का लेख है।

बाहर निकलते समय दाएं :

1. श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 29'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।
2. श्री श्वेत पाषाण के 19'' x 19'' के पाषाण पर 5'' की पादुका है। इस पर सं. 1588 ज्येष्ठ सुदि 5 का लेख है। चारों ओर कुम्भ, कलश, नन्दाव्रत, मतस्य, कछुआ, फरसा आदि उत्कीर्ण हैं।

मंदिर से बाहर निकलने पर बाई ओर से दाई ओर बड़ी देवरी में :

1. श्री पद्मप्रभ भगवान (मूलनायक) की पीत पाषाण की 13'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

धातु की प्रतिमाएं :

1. श्री जिनेश्वर भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1531 वैशाख सुदि 3 का लेख है।
2. श्री जिनेश्वर भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1480 वैशाख सुदि 5 का लेख है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1391 माघ सुदि 15 का लेख है।

देवरियों में –

1. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। लेख स्पष्ट नहीं है।
3. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।
4. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।
5. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1893 का लेख है।

6. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

7. श्री कुंथुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1596 आषाढ़ सुदि 3 का लेख है।

8. श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1586 आषाढ़ सुदि 9 का लेख है।

9. श्री शीतलनाथ भगवान के श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

10. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

11. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

12. श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1595 का लेख है।

13. श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर शीतल लिखा है।

14. श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1576 आषाढ़ सुदि 5 का लेख है।

15. श्री शातिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1591 का लेख है।

16. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

17. श्री कुंथुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर स्पष्ट लेख नहीं है।

18. श्री अनन्तनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

19. श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

20. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

21. श्री धर्मनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

22. श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1989 फाल्गुन शुक्ला 2 का लेख है।

23. श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

24. श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

25. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

26. श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

27. श्री श्रेयासनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

28. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

29. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

30. श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

31. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

32. श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

33. श्री जिनेश्वर भगवान श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन **प्रतिमा** है। इस पर कोई लेख नहीं है।

34. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

35. श्री धर्मनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1595 का लेख है।

बड़ी देवरी में :

36. श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक) पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

37. श्री जिनेश्वर भगवान (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

38. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है।

धातु की प्रतिमाएं :

1. श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा हैं इस पर सं. 1812 का लेख है।

2. श्री पद्मावती देवी की 4.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1222 आषाढ़ सुदि 2 का लेख है।

सम्पर्क सूत्र : (कार्यालय) 01472-241971, (किले पर) 242162

किले पर धर्मशाला है जहां आवासीय व्यवस्था है एवं स्टेशन पर धर्मशाला व भोजनशाला संचालित है।

वार्षिक ध्वजा माघ सुदि 2 को चढ़ाई जाती है।

वर्तमान में इस मंदिर की देख-रेख श्री सातबीस देवरी जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट चित्तौड़गढ़ द्वारा की जाती है जिसके अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी महात्मा हैं।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (सातबीस मंदिर परिसर)

यह शिखरबंद मंदिर श्री आदिनाथ भगवान के मंदिर के पीछे ही उत्तर दिशा में स्थित है। ऐसा उल्लेख है कि यह मंदिर श्री रतना दोशी द्वारा निर्मित है। श्री रत्ना शाह कर्माशाह के ज्येष्ठ भ्राता थे । इस मंदिर की प्रतिष्ठा श्री विद्या मंडन मुनि ने कराई । यह 15वीं शताब्दी का मंदिर है ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 19'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।
2. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दांए) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर सं. 2005 माह वदि 5 का लेख है।
3. श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं एवं यंत्र :

1. श्री चतुर्विंशति 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर दिनांक 15. 02.09 का लेख है।
2. अष्टमंगल यंत्र 5'' x 3'' के आकार का है। इस पर सं. 2065 का लेख है।

बाहर निकलते समय बाई ओर आलिए में पद्मावती देवी की पीत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। (बाईं ओर) इस पर सं. 2011 का लेख है।

सभामण्डप में दोनों ओर :

1. श्री हरिभद्र सूरि जी की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। (बाईं ओर) इस पर संवत् 2011 वै. शु. 7 का लेख है।
2. श्री नीतिसूरि जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2011 वै.शु. 7 का लेख है। आचार्य नीतिसूरीजी चित्तौड़गढ़ के सभी जिन मंदिरों जिर्णोद्धारक रहे।

यह मंदिर सातबीस देवरी जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट द्वारा संचालित है तथा सम्पर्क सूत्र व्यवस्था इसी संस्था की है।

वार्षिक ध्वजा माह सुदि 2 को चढ़ाई जाती हैं।

आचार्य नीतिसूरिजी—ये तपागच्छीय आचार्य थे । इनका जन्म संवत् 1930 पोष सुदि 11 को बाकानेर में हुआ । इनका बचपन का नाम निहालचंद था। इनके माता–पिता का नाम श्रीमती चौथीबाई एवं फूलचंद भाई था । इनकी कम उम्र को देखते हुए व माता–पिता की आज्ञा नहीं मिलने से दीक्षा नहीं दी गई तो इन्होंने स्वयं ने आम के वृक्ष के नीचे संवत् 1949 आषाढ़ सुदि 11 को महरवाड़ में दीक्षा ग्रहण की तब संवत् 1950 कार्तिक वदि 11 को श्री कान्ति विजय जी ने दीक्षा प्रदान की तदुपरान्त संवत् 1996 माह सुदि 11 को आचार्य पदवी से विभूषित हुए और संवत् 1998 में राणकपुर से उदयपुर विहार करते हुए चित्तौड़ में प्रतिष्ठा प्रसंग में विहार करते हुए एकलिंग जी पहुँचे, वहां अचानक स्वास्थ्य खराब होने से माघ वदि 3 को स्वर्ग सिधारे । अग्नि संस्कार उदयपुर में आयड़ में किया गया । बचपन से तपस्या के साथ–साथ एक साधक रहे। आपकी निश्रा में गिरनार तीर्थ का पिछले 100 वर्षो में प्रथम जीर्णोद्धारक हुआ तथा चित्तौड़गढ़ के जिले के मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया जिससे वे चित्रकूट जीर्णोद्धारक कहलाये।

इनकी चित्तौड़गढ़, उदयपुर (पद्मनाभ मंदिर), अमलावद में मूर्ति स्थापित है। कहा जाता है कि उदयपुर में आयम्बिल शाला की स्थापना की उसके बाद श्री हिमाचलसूरिजी ने विकास किया लेकिन उनके नाम का उल्लेख नहीं है । इनके नाम से उदयपुर में जैन नवयुवक नीतिसूरि बैण्ड संचालित है ।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (सातबीस मंदिर परिसर)

यह शिखरबंद मंदिर श्री आदिनाथ मंदिर के पीछे दक्षिण की ओर स्थित है। यह मंदिर 15वीं शताब्दी का निर्मित है। ऐसा उल्लेख है कि यह मंदिर श्री कर्मसिंह (कर्माशाह दोशी) ने निर्माण कराया, कालान्तर में यह पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर में परिवर्तित हुआ है। (यह लेखक की मान्यता है) मंदिर के बाहर कलात्मक तोरण बना है। इस मंदिर की प्रतिष्ठा श्री विद्या मंडन मुनि ने कराई। यह 15वीं शताब्दी का मंदिर है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की प्रतिमा हैं इस पर संवत् 1847 वैशाख सुद 15 का लेख है।

2. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की (पांच नाग छत्र का) 11'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा उदयपुर के समीप थूर ग्राम से यहां पदराई गई थी, कथनानुसार इस पर स. 1020 का लेख था, वर्तमान में दिखाई नहीं देता है, संभवत पीछे की ओर हो। प्रतिमा पर

लांछण स्वास्तिक का स्पष्ट है । ऐसा उल्लेख आता है कि सुपार्श्वनाथ के भी नाग का उत्सर्ग आया था इसलिए इनके मस्तक पर सर्प का छत्र कहीं–कहीं देखा जाता है ।

3. श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

धातु का यंत्र :

अष्टमंगल यंत्र 5'' X 3'' के आकार का है। इस पर सं. 2065 का लेख है।

निज मंदिर में –

1. सभामण्डप में श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। (बाईं ओर आलिए में)
2. सभामण्डप में श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (दाईं ओर आलिए में)
3. श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15 '' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है।
4. श्री धरणेन्द्र देव की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।
5. पट्ट श्वेत पाषाण का 15'' x 8'' के आकार पर दो पादुका जोड़ी स्थापित है। इसके किनारे सं. 1820 का लेख है। (बाईं ओर)

यह मंदिर सातबीस देवरी जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट द्वारा संचालित है। सभी व्यवस्था व सम्पर्क सूत्र संस्था के ही हैं।

वार्षिक ध्वजा माघ सुदि 2 को चढ़ाई जाती है।

श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर – चित्तौड़ किला

यह पाटबंध मंदिर चित्तौड़गढ़ किले पर गौमुख कुण्ड के पास स्थित है। यह पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर कहलाता है जबकि पार्श्वनाथ भगवान का कोई लांछण प्रतीत नहीं होता अतः इनको जिनेश्ववर भगवान ही कहना उपयुक्त होगा ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है ।

1. श्री पार्श्वनाथ (जिनेश्वर भगवान) की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है ।
2. श्री कीर्तिधर मुनि (मूलनायक के दायें) की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची खड़ी (काउसर्ग मुद्रा में) प्रतिमा है । इसके उपर कीर्तिधर उत्कीर्ण है ।
3. श्री सुकोशल मुनि (मूलनायक के बायें) की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची खड़ी (काउसर्ग मुद्रा में) प्रतिमा है । इसके उपर सुकोशल मुनि उत्कीण है ।

4. श्री सुकोशल मुनि के पास सिंहनी की मूर्ति है । यह सुकोशल मुनि के माता के जीव की है । यह सभी प्रतिमाएं एक ही पाषाण पर बनी हुई है । इनके उपर कन्नड़ भाषा में लेख है जिसमें केवल जिनेश्वर देव की स्तुति की है । बांयी ओर संस्कृत, प्राकृत भाषा में लेख है जिसमें इन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा वि. सं. 1408 में जिनभद्रसूरि का लेख है । इससे स्पष्ट होता है कि चित्तौड़ एवं दक्षिणी भारत का सम्बन्ध रहा है।

संकीर्ण मार्ग के दोनों ओर दीवार के आलिए में 19'' x 21'' व 11'' x 11'' पाषाणी पट्ट पर पादुका है – अस्पष्टता व अस्वच्छता के कारण लेख अपठनीय है व ज्ञात नहीं हो सका कि पादुका किसकी है। इसी मंदिर में एक गुफा बनी है जो महाराणा के महल से जुड़ी हुई है, ऐसा कहा जाता है कि इस गुफा के मार्ग से जनाना (रानियां) आकर पूजन, दर्शन किया करती थी, वर्तमान में यहाँ पद्मिनी का चित्र है। प्राचीनकाल में यह सुकोशल मुनि की गुफा थी।

जिस प्रतिमा (सुकोशल मुनि) का वर्णन किया है, वह प्रतिमा पदमासन में है । जो गुफा पद्मिनी की कहलाती है, वह रानी पद्मिनी का महल शांतिनाथ भगवान के

मंदिर के पास है, वहां तक गुफा नहीं है, ऐसी परिस्थिति में पद्मिनी का चित्र की गुफा बताना व पद्मिनी का चित्र लगाना उचित प्रतीत नहीं होता। इन सभी बिंदुओं के आधार पर श्री सुकोशल मुनि का मंदिर ही कहा जा सकता है।

ऐसा भी उल्लेख है, यहां पर महाराणा तेजसिंह की रानी जयतल्लदेवी ने संवत् 1322 में श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर बनवाया था, वर्तमान में नहीं है। इस मंदिर के ऊपर संभवतः शांतिनाथ भगवान का मंदिर हो । अधिकार (कब्जे) के सम्बन्ध में न्यायालय में वाद चल रहा है। इस मंदिर की देखरेख श्री सात वीस देवरी श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट द्वारा की जाती है ।

वार्षिक ध्वजा माघ सुदी 5 को चढ़ाई जाती है।

सुकोशल मुनि की जीवनी

अयोध्या नगरी का राजा कीर्तिधर था उसकी पत्नी सहदेवी थी । राजा कीर्तिधर के मन की भावना यह थी कि पुत्र जन्म लेते ही वे चारित्र धर्म अंगीकार करेंगे।

रानी ने पुत्र जन्म दिया, रानी ने एक कुचाल चल कर दासी के द्वारा अज्ञात स्थान पर भेज दिया । जांच करने पर सच्चाई का ज्ञान हुआ । बालक का नाम सुकोशल रखा। धीरे–धीरे रानी का राग पुत्र के प्रति बढ़ता गया और पति के प्रति कम होता गया ।

एक समय आया कि कीर्तिधर ने चारित्र धर्म अंगीकार किया और राज सिंहासन छोड़ निकल गये । कुछ वर्षो के बाद मुनि कीर्तिधर विहार करते हुए अयोध्या आये और रानी सहदेवी ने देखा तो पुत्र सुकोशल को दूर रखा लेकिन होनी को कौन टालता है । सुकोशल को इसका समाचार मिला, वह दौड़कर उपवन में गया जहाँ पर कीर्तिधर मुनि ठहरे हुए थे । सुकोशल पूर्व में ही आत्म कल्याण की ओर सोचता रहा था । राजार्षि के सम्पर्क में आने से भावना सुदृढ़ हो गयी और उन्होंने भी यहीं कहा कि पुत्र जो गर्भावस्था में था, होने पर चारित्र धर्म अंगीकार करेंगें ।

मुनि बनने के बाद वे घोर तपस्या में लीन रहे और माता सहदेवी का काल होने क्रोधावश के कारण सिंहनी के रूप में उत्पन्न हुए । एक समय जंगल में कीर्तिधर राजार्षि व मुनि सुकोशल काउसग्ग मुद्रा में तपस्या में थे उस समय सिंहनी उधर निकली, पूर्व भव का दृश्य ध्यान में आया। सुकोशल पर दृष्टि पड़ते ही उसकी वैर वृति सजग हो गई और उस पर आक्रमण करके उसके शरीर के टुकड़े–टुकड़े कर खाया और रक्तपान किया।

श्री शांतिनाथ भगवान का (चौमुखा जी) मंदिर – चित्तौड़ किला

यह शिखरबंद मंदिर गौमुख कुण्ड की ओर जाते समय दाहिनी ओर स्थित है। यह मंदिर सुकोशल मुनि के मंदिर के ऊपर ही निर्मित है। इस मंदिर को श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर कहा जाता है। उल्लेखानुसार श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर है, वास्तविक स्थिति स्पष्ट नहीं है। चारों दिशाओं में स्थापित प्रतिमाएं अजितनाथ भगवान व श्री जिनेश्वर (शांतिनाथ) भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची है। इनमें से एक प्रतिमा पर संवत् 1491 का लेख है।

ऐसा भी उल्लेख है कि गौमुख कुण्ड के पास मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर है, उसके सामने सुकोशल मुनि, कीर्तीधर मंदिर के अतिरिक्त कुम्भा के मंत्री वेला ने शांतिनाथ भगवान का मंदिर, श्री श्रेष्ठी डुंगर द्वारा निर्मित शांतिनाथ भगवान व श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर का उल्लेख है, उल्लेखानुसार यह स्पष्ट होता है कि चारों प्रतिमाएं उल्लेखित जिन मंदिर की प्रतिमाएं होगी, (ऐसी लेखक की मान्यता है)।

इस मंदिर के बारे में विस्तृत जानकारी करने की आवश्यकता है, इतिहासकारों को भविष्य में शोध करनी चाहिए। **इस मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ सुदि 2 को चढ़ाई जाती है।** इसकी देखरेख सातबीस देवरी श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर किला ट्रस्ट द्वारा की जाती है ।

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर – चित्तौड़ किला

यह घूमटबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ किले के रामपोल के आगे जाकर पुराना राजमहल के पास उत्तर की ओर स्थित है, यह एक छोटा कलात्मक मंदिर संवत् 1232 में बनाने का उल्लेख है। इसका वर्णन अनुच्छेद नं. 3 में किया गया है ।

करीब 1000 वर्ष प्राचीन है और संवत् 1505 में प्राचीन मंदिर के स्थान पर (संभवतया मुगलों द्वारा नष्ट होने पर)महाराणा कुम्भा के मंत्री श्री वेला ने नूतन मंदिर बनवाकर श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर की प्रतिमा स्थापित की। जिसकी प्रतिष्ठा श्री जिनसेनसूरि द्वारा सम्पन्न हुई। उस समय इसका नाम अष्टोपदोवतार शांति जिन चित्य था। जिसे ''श्रृंगार चौरी 'कहते हैं। इसमें कोई प्रतिमा नहीं है

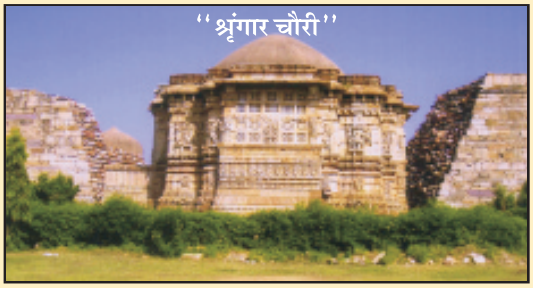
''श्रृंगार चौरी''

प्रतिमा की कला अद्वितीय रही है । भाव मण्डल की ओर पूरी वेदी पर सुंदर टाईल्स लगी है । मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1501 का लेख है जो श्री सोमसुंदर सूरि द्वारा प्रतिष्ठित है ।

निज मंदिर के बाहर की ओर :

1. गरूड़ यक्ष की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2017 कार्तिक सुदि 12 का लेख है।
2. निर्वाणी देवी की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2017 फागुण का लेख है।

किले पर रणवीर द्वारा बनाई दीवार अलाउद्दीन खिलजी के समय मंदिर व भवनों को नष्ट किये गये (वि.सं. 1332) पत्थर द्वारा बनवाई गई। यहां पर एक लेख रत्नसिंह श्रावक ने शांतिनाथ भगवान का मंदिर निर्माण के बारे में उल्लेख है। समधर के पुत्र महणसिंह की भार्या साहिणी की पुत्री कुमारीया श्राविका ने पितामह ढाडा के श्रेयोर्थ देवकुलिका बनाई। ये चैत्यालय कौनसा है, स्पष्ट नहीं है।

इसका जीर्णोद्धार सं. 1990 का होने का शिलालेख है। इसका संचालन सातबीस देवरी जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट द्वारा संचालित है। सातबीस मंदिर ट्रस्ट के सम्पर्क सूत्र ही प्रयोग में लिये जाते हैं।

वार्षिक ध्वजा माघ सुदी 13 को चढ़ाई जाती है।

यदि जगत में 'गेस्ट' की हैसियत से रहना आ गया तो मानो पूरा जगत आपका अपना है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर – चित्तौड़ किला

यह घूमटबंद मंदिर 1000 वर्ष प्राचीन बतलाते हैं और वि.सं. 1167 में महावीर भगवान का मंदिर बनवाने का उल्लेख मिलता है और मंदिर की मूल वेदी के नीचे की ओर एक लेख (हिन्दी अनुवाद) का पट्ट लगा है उसमें सवंत् 1110 का लेख अंकित है। यह संभव है कि बाद में 15 वीं शताब्दी में जिर्णोद्धार करवाकर प्रतिमाएं स्थापित कराई हो।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर संवत् 1555 जिनदत्त का लेख है।
2. श्री अजितनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1110 – गुणचन्द्र सूरि का लेख है।

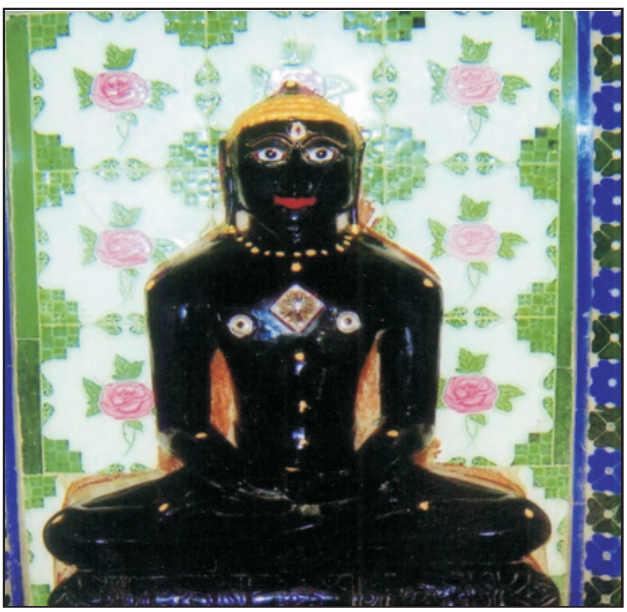

3. श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 1198 – कनकचन्द्र का लेख है।

वेदी की दीवार के बीच में एक शिलालेख लगा हुआ है वह इस प्रकार है –

''श्री ।। 28 ।।

श्री चित्रकुट स्था श्री बिंब प्रवेश प्रशस्ति।

अजितवीर विभुं सुमति सदा भविक पद्म विकास

दिवाकरणं प्रबल मोह विनाशक महंताम्

त्रितयमादिकर प्रणतो अस्मय हम

एत्रासिम्ब त्रयमध्ये श्री मूलनायक महावीर बिम्बम् विक्रम संवत् 1555 श्री जिनदत्त प्रतिष्ठितम्। वाय पार्श्वस्थ सुमतिनाथ बिम्बम् 1198 वर्षे कनकसुंदर सूरि प्रतिष्ठितम्। दहिन पार्श्व स्थमाजितनाथ बिम्बतु 1110 वर्षे भट्टारक श्री गुणसुंदर सूरि प्रतिष्ठितम् वर्तने। बिम्ब त्रय स्थिरिकण विधिः। श्री विवेकसेन श्रीमदे पराधिपति भारत मार्धन्य छत्रपति महाराणा श्री 108 श्री फतेहसिंह जी विजयराजे श्री चित्रकूट नगरस्थ न्यायाधिकारी जिनयापालक महेता श्री जीवनसिंह जी तस्यादि मेदपाट शिल्पाकाराधिकारी जिन धर्म कर्मठ मुरडिया श्री हिरालाल जी तस्य पुत्र सहायेन ओसवंशे शाखायां चपलोत गौत्रे मात्राभ्याम नंदलाल चिमनलाल नाम्यो 1500 श्रावक हम सहायेन करापिते नविन जिन प्रासादे संवत् 1971 वर्षे माघशुक्ला त्रयादेशी शुक्रवासरे कृत। श्री जिन दायक जिनेश्वर राजे प्रणभ्यस्द्रत्या। श्री नित्य विनय सुगुरू स्मरणय विलेकितो लेखः। इति संवत् 1972 उदयपुर चर्तुमास निवासी श्री मत्यस्य पाट प्रमाण विजयगणि लिखित प्रशस्तिः

उदयपुर निवासी शाह मोतीलाल नंदलाल चिमनलाल ने इसको पूर्ण कराया।

इस मंदिर की देखरेख श्री सातबीस जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट द्वारा की जाती है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माह सुदी 13 को चढ़ाई जाती है।

संवत् की 12वीं शताब्दी के यतियों की प्रभुत्व था और राजाओं द्वारा उनको बहुत सम्मान दिया जाता था। इसका जिनवल्लभसूरि ने विरोध किया और उनके सदुपदेश से श्रेष्ठीगण ने संवत् 1167 में महावीर भगवान का मंदिर बनवाया जहां पर उन्होंने (जिनवल्लभसूरि) ने अष्टसप्तिका, संघ पट्टक, धर्म शिक्षा आदि ग्रन्थों की रचना की। संभवतया यही मंदिर रहा होगा।

सातबीस मंदिर व अन्य मंदिर के सम्बन्ध में उपलब्ध लेख

विक्रम की 5 वीं शताब्दी से 16 वीं शताब्दी तक जैनी श्रेष्ठि का प्रभुत्व था, गौरवशाली इतिहास रहा है, अनेक मंदिर बनाए। महाराणा के प्रधान व मुख्य पदों पर जैन श्रेष्ठी थे। संवत् 1495 के लेख में 104 श्लोक हैं। इसमें सरस्वती, ऋषभदेव, शांतिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर की स्तुति है तथा मेवाड़ के शासकों व मंदिर निर्माण कराने वाले साधु गणराज की वंशावली का वर्णन है।

यह मंदिर कहाँ व कौनसा है ? ज्ञात नहीं, 15वीं शताब्दी में महाराणा कुम्भा के राज्यकाल में प्रधान रामदेव की ससुर वीसल ने यहाँ श्रेयासनाथ भगवान का मंदिर बनवाने का उल्लेख है। कहाँ है ? ज्ञात नहीं।

माण्डवगढ़ के महामंत्री पेथड़शाह द्वारा भी यहाँ मंदिर बनवाने का उल्लेख है। यहाँ पर जैन कीर्तिस्तम्भ स्थापित है जो अपनी वास्तुकला की दृष्टि से जैन इतिहास के गौरव गाथा की याद दिलाता है। यद्यपि इसके निर्माण काल के बारे में भिन्न–भिन्न विचार हैं जिसका वर्णन इसी पुस्तक में ''मेवाड़ – चित्तौड़ व जैन धर्म'' नामक शीर्षक में किया है।

चित्तौड़ के प्रधान श्री कर्माशाह दोशी ने शत्रुंजय तीर्थ का 16वाँ उद्धार संवत् 1587 में करवाया था।

चित्तौड़ कला व सौन्दर्य की दृष्टि में एक अनुपम उदाहरण है। गौमुखी कुण्ड के यहाँ पर श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर पाटबंद व शांतिनाथ भगवान का मंदिर होने का उल्लेख है। जिसमें से श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर संवत् 1100 में बनवाने का उल्लेख है तथा प्रत्यक्षदर्शी का कथन है कि सं. 1347 का शिलालेख था।

वि.सं. 1324 (1267 ई.) का गम्भीरी नदी के पुल का लेख है जिसमें चैत्र गच्छ के आचार्य रत्नप्रभ का लेख है जिसमें चैत्र गच्छ के आचार्य रत्न प्रभ सूरि के उपदेश से तेजसिंह के आदेश से राजपुत्र कांगा के पुत्र ने किसी भवन का निर्माण कराया था जो एक राजपूत था।

वि.सं. 1335 वैशाख सुदि 5 गुरूवार का लेख श्याम पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर के द्वार के छबड़े का है जो उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है। इस लेख में भर्तपरीय गच्छ के जैनाचार्य के उपदेश से राजा तेजसिंह की पत्नी जयतल्ल देवी ने श्याम पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर बनवाया, ऐसा उल्लेख है लेकिन वर्तमान में विद्यमान नहीं है।

एक लेख चित्तौड़गढ़ से प्राप्त हुआ था, वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। उसकी एक प्रति अहमदाबाद के भारतीय मंदिर में संग्रहित है। लेख में 78 श्लोक है, इसमें महाराणा भोज व उसके वशंज का वर्णन है। इसी वंश में नरवर्मा का वर्णन है जिसका अधिकार चित्तौड़ पर प्रशस्ति के अनुसार **महावीर भगवान के मंदिर का निर्माण व श्रेष्ठिवर्य के नाम का उल्लेख है** तथा नरवर्मा ने भी जिनालय के लिए दो पारूथ मुद्रा देने का वर्णन है। महाराणा समरसिंह के समय में संवत् 1353 के फाल्गुन वदि 5 को चित्तौड़ के चौरासी मोहल्ला में 11 जैन मंदिरों की स्थापना की। शोध का विषय है।

इसी प्रकार संवत् 1506 का एक शिलालेख है जिसके महाराणा लाखा, मोकल, कुम्भा का वर्णन है तथा वेला के पिता कोला ने मंदिर की प्रतिष्ठा जिनसागर सूरि के शिष्य जिनसमुद्र सूरि से कराने का उल्लेख है।

किले पर निम्न मंदिर स्थापित थे :

संवत् 16 वीं शताब्दी तक किले पर तपा खरतर, आचल, चित्रवाल पूर्णिमा मलधार गच्छ के 34 मंदिर स्थापित थे।

1. श्री श्रेयांसनाथ भगवान का मंदिर
2. श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर – श्री ईश्वर श्रेष्ठी द्वारा निर्मित
3. श्री सोम चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर
4. श्री चौमुख चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर
5. श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर
6. श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर
7. श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर
8. 60 सीढ़ियों युक्त निर्मित चित्रकूटीय महावीर भगवान के मंदिर में दो मंदिर श्री कुमारपाल व क्षेत्रपाल के पुत्र ने बनाया।

9. श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर श्री रत्ना शाह दोशी द्वारा निर्मित है।
10. श्री सुपार्श्वनाथ का मंदिर कर्माशाह दोशी द्वारा निर्मित है।
11. श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर जिनदास शाह द्वारा निर्मित है।
12. श्री श्याम पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर राजमाता जयतल्लदेवी
13. श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर (मलधार गच्छीय)
14. श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर
15. श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर
16. श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर (खरतरगच्छीय)
17. श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (सातफणा)
18. श्री सुमतिनाथ भगवान बहरड़िया धनराज द्वारा निर्मित
19. श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर डागा जिनदत्त द्वारा निर्मित
20. श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर (लीलावसीह)
21. श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर (नागौरी द्वारा)
22. श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर (अचलगच्छीय)
23. श्री मुनिसुव्रत भगवान (नाणावाल गच्छीय)
24. श्री सीमंधर भगवान का मंदिर (पल्लीवाल गच्छीय)
25. श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (नाणावाल गच्छीय)
26. श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (चित्रवाल गच्छीय)
27. श्री सुमतिनाथ का मंदिर (पूर्णिमा गच्छीय)
28. चौमुखी आदि जिन मंदिर (मालविया का)
29. श्री मुनिसुव्रत (जसवाल का) भगवान का मंदिर
30. श्री कीर्तीधर, सुकोशल मुनि का मंदिर
31. श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर (वेला सेठ)
32. श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर (सरणावसीय) जयकीर्ति स्तम्भ
33. श्री शांति जिन मंदिर (श्रेष्ठी डुंगर)
34. श्री सम्भवनाथ जिन मंदिर

चित्रकूटीय महावीर प्रासाद प्रशस्ति : श्री चारित्ररत्न गणि द्वारा रचित जो रायल एशियाटिक सोसायटी के जर्नल में सर भण्डारकर ने स. 1908 में प्रगट की। उक्त सूची सं. 1526 में पं. जयहेम ने रचना की और सं. 1573 में श्री हर्षप्रमोद के शिष्य श्री गायंदी ने रचना की।

बड़ीपोल के पास जिन मंदिर के कई अवशेष थे उसमें से कई मूर्तियों के परिकर थे उसमें से एक परिकर मिला जिसमें संवत् तो नहीं मिला लेकिन चेत्रवाल गच्छ के प्रतापी आचार्य भुवनचन्द्रसूरि के शिष्य का वर्णन है जिसे जैनी श्रेष्ठी का सम्मान किया, उनके उपदेश से सीमंधर स्वामी युगमधर स्वामी की प्रतिष्ठा कराई। ऐसा उल्लेख हैं। **संवत् 1419, 1505, 1510, 1513, 1531 के लेख** आते हैं जिसमें तपागच्छीय आचार्य ने प्रतिष्ठा करने का उल्लेख है।

मीरा बाई के मंदिर का अवलोकन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि कभी वह जैन मंदिर रहा होगा। शिखर भाग में एक मंगल चैत्य दिखाई देता है। बाईं और व दाई और ऊपर की तरफ तोरण के यहां जिन मूर्तियें दिखाई देती हैं। दाईं और पिछली दीवार में पंचतीर्थी है। अतः वह जैन मंदिर है या जैन मंदिर का पत्थर लगा हो। इसके आगे मोकल राणा के मंदिर हैं जो समधेश्वर मंदिर है।

भोजराज द्वारा निर्मित त्रिभुवन नारायण का मंदिर है। मंदिर का जिर्णोद्धार हुआ तब **संवत् 1207 का कुमारपाल का लेख है**, इस मंदिर के पिछले भाग में जैन मूर्तिओं की कोरणी है। इसके एक के हाथ में मुंहपति है। मंदिर के बाहर बाईं ओर एक दीवार में तीर्थकर भगवान के अभिषेक करते हुए इन्द्र देवता व उनके हाथ में कलश और जिन मूर्ति है, दूसरी दीवार के ऊपर एक जैनाचार्य की मूर्ति है, जिनके हाथ में मुंहपति व दूसरे हाथ में पुस्तक हैं, इनके सामने श्रावक, श्राविका बैठे हैं अर्थात् प्रवचन सुन रहे हैं। इसी प्रकार अन्य जैनाचार्य की मूर्ति भी हैं।

श्री हरिभद्र सूरि स्मृति मंदिर, चित्तौड़गढ़

यह मंदिर पाडनपोल के बाहर (चित्तौड़गढ़ किले पर जाते समय प्रथम दरवाजे के बाहर) सड़क के किनारे स्थित है। यह नूतन 35 वर्ष पूर्व का निर्मित मंदिर है। इसके संस्थापक श्री जिन विजय जी हैं।

भूतल पर उपाश्रय व ज्ञान भण्डार है प्रथम मंजिल पर निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1. श्री हरिभद्र सूरि (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 41'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री याकिनी महत्तरा (साध्वी) धर्ममाता (मूलनायक के ऊपर) की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री जिनभद्रसूरि (मूलनायक के दाए) की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।
4. श्री जिनदत्त सूरि (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।
5. श्री जिनभद्र की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है।
6. श्री वीरभद्र की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है।

दोनो तरफ :

1. श्री जिनेश्वर सूरि की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री अभयदेव सूरि की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

उक्त सभी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संवत् 2029 महासुदि 13 गुरूवार को सम्पन्न हुई और इसी वर्ष का सभी प्रतिमाओं पर उत्कीण लेख हैं।

बाहर निकलते समय दाएं :

1. श्री गौरा भैरव की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2065 चैत्र शुक्ला 13 का लेख है।

2. श्री काला भैरव की पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2065 का लेख है।

बाहर निकलते समय बाई ओर देवरी में :

1. श्री सिद्धर्षि (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 माह सुदि 13 का लेख है।

2. श्री उद्योतन सूरि (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 माह सुदि 13 का लेख है।

3. श्री पुण्य विजय की (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 माह सुदि 13 का लेख है।

बाहर निकलते समय दाई ओर देवरी में :

(क) श्री सिद्धसेन दिवाकर (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है।

(ख) श्री जिन वल्लभसूरि (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(ग) श्री जिनदत्तसूरि की (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इन सभी प्रतिमाओं पर सं. 2029 का लेख है।

द्वितीय मंजिल में (श्री महावीर भगवान का मंदिर) :

1. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 माह सुदि 13 का लेख है।
2. श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 माह सुदि 13 का लेख है।
3. श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 माह सुदि 13 का लेख है।

धातु की उत्थापित प्रतिमा व यंत्र :

1. श्री शांतिनाथ भगवान की चतुर्विंशति 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर दिनांक 15.02.2009 का लेख है।
2. श्री अष्टमंगल यंत्र 4'' x 3'' के आकार का है। इस पर सं. 2065 का लेख है।
3. श्री महावीर भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 का ज्येष्ठ शुक्ला 6 का लेख है।
4. श्री सिद्धचक्र यंत्र 7'' गोलाकार है।
5. श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'' गोलाकार है।
6. श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' x 2.5'' का है। इस पर सं. 2065 का लेख है।

बाहर :

1. श्री मांतगयक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 का लेख है।
2. श्री सिद्धायिका यक्षिणी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 का लेख है।

3. श्री जिनकुशलसूरि की श्वेत पाषाण की 29'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 का लेख है।

बाहर बाई ओर आलिए में तृतीय मंजिल पर – (श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर) :

1. श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2029 का लेख है।
2. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2029 का लेख है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2029 का लेख है।

प्रथम मंजिल के बाई ओर – श्री नाकोड़ा भैरव का मंदिर स्थापित है। यहाँ पर श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 31'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2065 चैत्र शुक्ला 13 का लेख है। इसके पास ही श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ का भव्य मंदिर निर्माणाधीन है। **वार्षिक ध्वजा माघ सुदि 13 को चढ़ाई जाती है।** मंदिर का संचालन श्री जिनदत्तसूरि सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा किया जाता है।

इस ट्रस्ट के संस्थापक मुनि श्री जिन विजय जी है।

सम्पर्क सूत्र : श्री भगवतीलालजी नाहटा,
फोन 01472–246149, मो. 9414249118

उक्त प्रतिमाओं के आधार पर टिप्पणी निम्न प्रकार है :

1. श्री हरिभद्र सूरि

जन्म नाम–श्री हरिभद्र — जन्म स्थान–चित्तौड़गढ़ (मेवाड़)

माता का नाम – गङ्: गाण — पिता का नाम – शंकर भट्ट

उपनाम – ''भव विरह'' — दीक्षा नाम–मुनि हरिभद्र (आचार्य हरिभद्र सूरि)

कुल – अग्निहोत्री ब्राह्मण (पुरोहित परिवार)

जीवनकाल – विक्रम संवत् 757 से 827 के बीच का निर्धारण श्री जिन विजय के आधार पर विक्रम संवत् 834 में हुआ। जैन परम्परा का इतिहास द्वारा त्रिपुटी के अनुसार श्री हरिभद्र सूरि का स्वर्गवास से 585 में हुआ। अतः आचार्य हरिभद्रसूरि का जीवनकाल 6वीं शताब्दी का निर्धारण होता है। **उद्योतनसूरि** ने ''कुवलयमाला'' में आचार्य हरिभद्र सूरि को स्मरण गुरू के रूप में किया है। आचार्य हरिभद्र सूरि षड् दर्शन के प्रखण्ड विद्वान थे और उन्हें सभी चौदह विद्याओं का ज्ञान था। वे जिन धर्म के विरोधी रहे हैं। उनके शब्दों में हाथी के पैर नीचे कुचल कर मरना स्वीकार था परन्तु जिन्दा रहने के लिए जिन मंदिर में पैर रखना स्वीकार नहीं था। यह उनकी भीषण प्रतिज्ञा थी तथा उन्होंने यह भी प्रतिज्ञा की थी जो कोई उन्हें शास्त्रों में हरा देगा, उसके शिष्य बन जावेंगे।

2. **सा. महत्तरा –** जैन साध्वी याकिनी महत्तरा (धर्ममाता) अपने उपाश्रय में मधुर कण्ठ से स्वाध्याय घोष प्रवाहित गाथा गा रही थी, उसमें ''चक्कि दुर्ग'' शब्द का अर्थ समझ में नहीं आ रहा था – मस्तिष्क में काफी दबाव डालकर भी सोचा लेकिन सफल नहीं हुए, अन्त में वे साध्वी जी सम्मुख खड़े होकर उन्होंने उद्घोषणा की आप मेरी आज से **धर्म माता** हैं और उन्हें इस शब्द की जानकारी देवें। साध्वी जी ने कहा साध्वी को यह अधिकार नहीं था अतः आप उनके गुरू श्री जिनभद्रसूरि के पास जाएं वे ही आपको अर्थ बतलावेंगे और उन्होंने पुनः कहा कि आज से उनकी पहचान याकिनी महत्तरासु होगी। इस प्रकार याकिनी महत्तरा **धर्म माता** कहलाने लगी।

3. **श्री जिनभद्र सूरि –** आचार्य श्री हरिभद्र सूरि के गुरू थे।

4. **श्री जिनदत्त सूरि –** ये हरिभद्र सूरि के विद्यादाता थे। जब हरिभद्र सूरि ने ''चक्कि दुर्ग'' के अर्थ के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि यह एक आगम कथा से सम्बन्धित है और उसको पढ़ने के लिए जैन साधु बनना पड़ता है। इसी आधार पर हरिभद्र जी ने कहा कि वे जैन साधु बनने को तैयार हैं, उन्हें वस्त्र दिये जाएं। श्री जिनदत्त सूरि ने उन्हें शुभ मुहूर्त में साधुवेश अर्पण किया और वे जैन मुनि बन गये।

5. **शिष्य श्री हंस एवं परमहंस** दोनों ही श्री हरिभद्र सूरि के सांसारिक भाणेज थे, दोनों ही विद्वान् थे। वे जैन धर्म के अतिरिक्त बौद्ध धर्म का भी अध्ययन

करना चाहते थे । हरिभद्र जी के न चाहते हुए उनकी हठ से विवश होकर स्वीकृति प्रदान की और वे बौद्ध के मठ में भिक्षु बन कर प्रवेश कर गये। एक दिन वास्तविकता का ज्ञान होने पर वे भागे लेकिन अन्त में (कहानी लम्बी होने से नहीं लिखी जा रही है) अपने – अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। इस पर क्रोधवश हरिभद्रसूरि ने बदला लेने का प्रण कर लिया। ऐसी परिस्थिति विद्यादाता गुरू ने जैन दर्शन का बोध कराया और बदले में कुछ प्रतिशत ही सफलता प्राप्त कर छोड़ दिया। लेकिन उनके दोनों शिष्यों के अतिरिक्त कोई और शिष्य नहीं था इसी विचारों में तल्लीन रहने लगे। ऐसे समय अम्बिका देवी ने भी हरिभद्र सूरि को कहा कि गुरूकुल वृद्धि का पुण्य तुम्हारे भाग्य में नहीं है, लेकिन सैकड़ों शास्त्र ही तुम्हारे शिष्य बनकर तुम्हें याद करेगा। इस प्रकार उन्होंने 1444 ग्रन्थों की रचना की और **यह रचना ही इनके शिष्य माने जा सकते हैं।**

6. **श्री जिनभद्र –** इनका जन्म वीर सं. 1011, दीक्षा सं. 1025 में युग प्रधान पद सं. 1055 में व सं. 1115 में स्वर्गवास हुआ। इन्होंने विशेषाश्यक भाग्य टीका अपूर्ण गाथा 4500, जीतकल्प, सभाष्य विशेषण ग्रन्थ 400, वृहदसंग्रहणी, बृहत क्षेत्रसमास, ध्यान शतक निशीथ भाग्य आदि ग्रन्थों का निर्माण किया।

7 **श्री वीरभद्र –** ये आठवीं शताब्दी के आचार्य थे। इनके उपदेश से जालोर में भगवान ऋषभदेव का विशाल, मनोहर शिखरबंद मंदिर बनाया जिसकी प्रतिष्ठा आचार्य उद्योतन सूरि ने की। ये आचार्य तत्वाचार्य के शिष्य थे।

8. **उद्योतन सूरि –** आचार्य श्री बटेश्वरसूरि श्रमा श्रमण ने इनको चन्द्रकुलीन आचार्य बताया है। इन्होंने ''कुवलयमाला'' की रचना की यह पहला ग्रन्थ है जिसे जैन अजैन कवियों को स्मरण किया है। इनका नाम भावमयी भाषा में वर्णन किया गया है।

9. **जिन वल्लभसूरि –** ये चैत्यपरिपाटी के आचार्य थे तथा श्री जिनदत्तसूरि (प्रथम दादा) के गुरू थे। इनकी विस्तृत जानकारी 'मेवाड़–चित्तौड़ व जैन धर्म' में है।

10. **श्री सिद्धसेन दिवाकर –** यह महान् विद्वान् थे, इन्होंने चित्तौड़ में रहकर

अध्ययन किया। **महाराणा विक्रमादित्य को प्रति बोध कर जैन बनाया।** इन्होंने अवन्तिका का त्याग कर मेवाड़ को ही अपनी कर्म भूमि बनाई।

11. **श्री सिद्धर्षि –** 10वीं शताब्दी के महान विद्वान आचार्य थे। ये दुर्ग स्वामी के शिष्य थे, इनके पिता का नाम शुंभकर , माता का नाम लक्ष्मी व पत्नी का नाम धन्या था। ये भीनमाल नगर में रहने वाले थे, इन्होंने दीक्षित गुरू गर्गर्षि था। इन्होंने जैन दर्शन व बौद्ध दर्शन का अध्ययन किया और इन्होंने पाया कि दोनों धर्म के सिद्धान्त अच्छे हैं, उनको अपने आप में जिसका पालन करना चाहिये। यह सोचकर कभी बौद्ध धर्म के भिक्षु के पास तो कभी जैन आचार्य के पास इस प्रकार 21 बार आने – जाने के बाद भी निर्णय नहीं ले पाये तो जैन आचार्य ने श्री हरिभद्र सूरि का ग्रन्थ ललित विरतरावत्रि को पढ़ने को दिया। इसका अध्ययन करने के बाद सभी भ्रांतियां दूर होकर जैन धर्म का चयन किया। इन्होंने कई साहित्यों की रचना की। इनके साहित्य की प्रशंसा **हर्मन जेकोबी** ने भी अपनी पुस्तक में की।

12. **श्री पुण्य विजय जी –** ये तपागच्छीय मुनि थे। इनका जन्म वि.स. 1952 कार्तिक शुक्ला 5 को कपड़वंज में हुआ। दीक्षा वि.स. 1965 माह वदि 5 को श्री चतुर विजय ने प्रदान की। ये प्राचीन भाषा के ज्ञाता थे। इन्होंने कई प्राचीन ग्रन्थों का संशोधन कर ख्याति प्राप्त की। कई ज्ञान भण्डारों की सुव्यवस्था की। इनको **आगम प्रभाकर** कहा जाता है।

13. **श्री जिनेश्वर सूरि –** ये खरतरगच्छ के संस्थापक थे। इन्होंने संवत् 1073 में पाटण के दुर्लभराज के समय में अन्य धर्माचार्य के साथ शास्त्रार्थ कर खरे उतरे। इनको खरतर की उपाधि प्रदान की। इसलिए खरतरगच्छ कहलाने लगा।

14. **श्री अभयदेव सूरि –** ये चेत्यपरिपाटी या चन्द्रकुलीन के महान् आचार्य थे। इन्होंने आगम के 11 अंगो में से अंतिम 9 की टीका लिखी और नवांगी टीकाकार कहलाए तथा सिद्धसेन दिवाकर की सम्मति से गाथा 167 से अधिक 25000 श्लोक तक संस्कृत में टीका बनाई। शौध का विषय है ।

श्री महावीर भगवान का मंदिर–चित्तौड़गढ़ शहर

यह घूमटबंद मंदिर धींगो का कहलाता है। मंदिर किले के नीचे जूना (प्राचीन) बाजार में स्थित है। कथनानुसार मंदिर 400 वर्ष प्राचीन है। बाहर शिलालेख भी है लेकिन चूना सीमेन्ट लगने से अपठनीय है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है।
2. श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1624 वै.सु. का लेख है।
3. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर सं. 1661 वै.सु. 3 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाए व यंत्र :

1. श्री आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री शांतिनाथ भगवान की चतुर्विशंति 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 15.02.09 का लेख है।
3. श्री महावीर भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2043 का लेख हैं।

4. श्री शांतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।
5. श्री कुथुनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2038 का लेख है।
6. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर अपठनीय लेख हैं।
7. श्री सिद्धचक्र यंत्र (नवकार मंत्र) 9'' गोलाकार है। इस पर कोई लेख नहीं है।
8. श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' गोलाकार है। इस पर सं. 2040 का लेख है।
9. यंत्र तांबे का 9'' ऊँचा है। इस पर मंत्र उत्कीर्ण हैं।
10. अष्टमंगल यंत्र 6''x 3.5'' का है। इस पर 2045 वैशाख शुक्ला 5 का लेख है।

दोनो और आलिओं में :

1. श्री जिनेश्वर भगवान की (बाईं ओर) श्वेत पाषाण की 15'' व परिकर सहित 31'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है।
2. श्री नवपद का चित्रपट्ट स्थापित है।
3. श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1941 पोष वदी का लेख है।
4. श्री माणिभद्र वीर की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1941 पोष वदी का लेख है।

परिक्रमा परिसर में तीनों ओर देव देवियों व अप्सराओं की मूर्तियाँ हैं। मुख्य दरवाजे पर नगारखाना है व सुन्दर कलाकृति व प्राचीन चित्रकारी विद्यमान है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 6 को चढ़ाई जाती है।

श्री चितांमणि पार्श्वनाथ का मंदिर

मंदिर से बाहर निकलते समय दाई ओर एक कमरा है जिसको चितांमणि पार्श्वनाथ का मंदिर कहा जाता है। कहा जाता है ये मंदिर 800 वर्ष प्राचीन है वर्तमान में एक देवरी में प्रतिमाएं विराजित है।

इस देवरी में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है –

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1887 का लेख है।
2. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।इस पर सं. 156 अंक स्पष्ट है चौथा अंक अस्पष्ट है संभवतया 1566 है।
3. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख नहीं है।
4. श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) पीत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1959 का लेख है।
5. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

इस मंदिर की देखरेख समाज द्वारा की जाती है। सं. 1887 वर्ष में जिर्णोद्धार हुआ, अन्त में सं. 1941 पोष वदी 8 का जिर्णोद्धार हुआ।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 6 को चढ़ाई जाती है, ध्वजा दण्ड नहीं है ।

सम्पर्क सूत्र – समाज की ओर से श्री मिट्ठालाल जी बोलिया, फोन 01472-246383

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर

(यति जी का मंदिर), पुराना बाजार, चित्तौड़गढ़

यह मंदिर श्री आदिनाथ भगवान का है यति जी किसी व्यक्ति को दर्शन के अतिरिक्त सेवा पूजा नहीं करने देते है । वह इनका निजी मंदिर है ।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गिलुण्ड

यह शिखरबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। उल्लेखानुसार यह आदिनाथ भगवान का मंदिर 100 वर्ष प्राचीन है। वर्तमान में पार्श्वनाथ भगवान का है। मंदिर के बाहर शिलालेख है, जिसमें संवत् 1991 का सन्दर्भ है और गाँव के सदस्यों के अनुसार इसका निर्माण संवत् 1982 में हुआ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि.संवत् 2008 वीर सं. 2478 माघ सुद 6 का लेख है। केवल नीचे का पट्ट 11'' x 13'' श्याम पाषाण का है।
2. श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

नीचे की वेदी पर आदिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। पूर्व में यह प्रतिमा मूलनायक के रूप में विराजित थी।

उत्थापित प्रतिमाएं व यंत्र धातु की :

1. श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 2018 का लेख है।
2. श्री आदिनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 1533 का लेख है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
4. श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' गोलाकर है। इस पर संवत् 2018 का लेख है।
5. श्री अष्टमंगल 5'' x 3'' का है। इस पर संवत् 2018 का लेख है।

बाहर –

1. श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

जिन मंदिर (गम्भारा) के बाहर ऊपर श्री गणेश की मूर्ति है।

पुजारी द्वारा नियमित पूजा होती है। **मंदिर की 2 बीघा जमीन है।** **वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 5 को अनियमित चढ़ाई जाती है।** पोष वदि 10 को चढ़ाने का प्रस्ताव विचाराधीन है। इस मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री डूंगरवाल व श्री अमृतलाल जी चोपड़ा करते हैं। बाहर शिलालेख में संवत् 1991 का सन्दर्भ है। पूर्व में जिर्णोद्धार सं. 2055 (ई. 1998) में सम्पन्न हुआ।

सम्पर्क सूत्र फोन : 01472-280666

'आग्रह' 'अहंकार' का फोटो है। सामनेवाले में कितना अहंकार है, यह उसके आग्रह द्वारा जाना जा सकता है।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, घटियावली

यह पाटबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 100 वर्ष से अधिक प्राचीन है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहां के वंशज शक्तावत रहे हैं। चित्तौड़ पर मुगल आक्रमण के समय यहां के लोगों ने बलिदान दिये हैं, जिसके लिए इतिहास में यहां का नाम ऊपर हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1962 पोष वदि 3 का लेख है।
2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1962 पोष वदि 3 वृहस्पतिवार का लेख है।

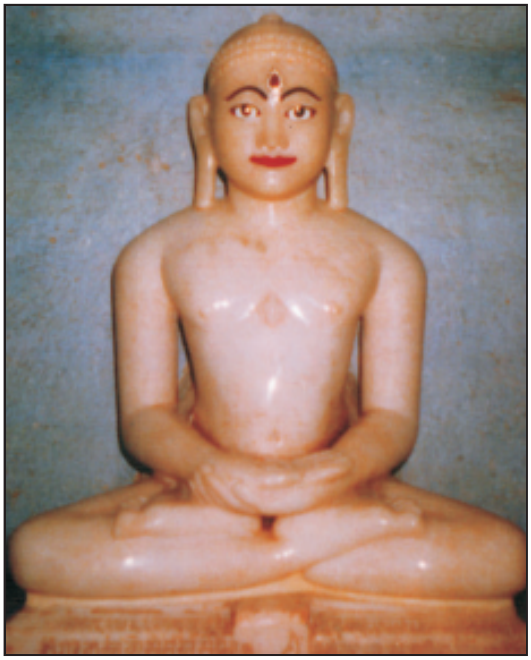

श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची धातु की प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

बाहर :

श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची है। श्री पद्मावती देवी की खण्ड़ित प्रतिमा है। **ध्वजा दण्ड उपलब्ध नहीं होने से वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है। मंदिर की 4 बीघा जमीन है**, चित्तौड़ शहर में भी दो दुकानें होने की जानकारी है। ऐसी जानकारी है कि दुकानें बेच दी हैं। **शोध का विषय है।** मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सोहनलाल जी गांग, शांतिलाल जी गांग करते हैं।

इस जगत में कर्ता पुरुषों के लिए 'मेहनत' है और अकर्ता पुरुषों के लिए 'वैभव' है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर सेंती, चित्तौड़गढ़

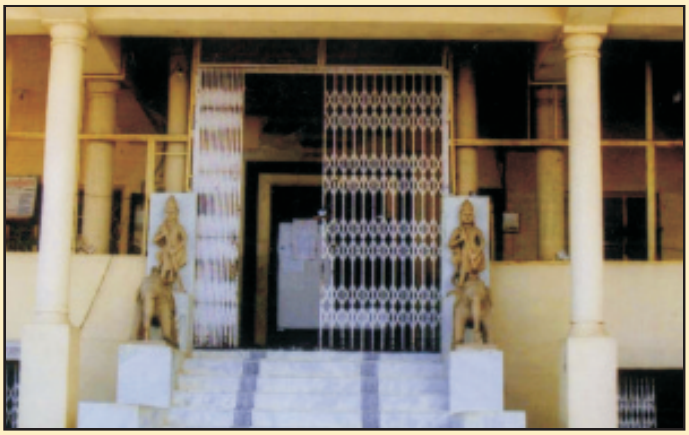

यह घुमटबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ रेल्वे स्टेशन से 2 किलोमीटर (उदयपुर सड़क मार्ग पर) दूर स्थित है। यह नूतन 25 वर्ष प्राचीन मंदिर है।

इसकी भूमि श्री हीरालाल जी दोशी व श्री आनन्दीलाल जी नागौरी ने ने राज्य सरकार से धर्म कार्य के लिए आवंटन कराई जिसके फलस्वरूप यहां पर आस-पास ही शिव, हनुमान, गायत्री मंदिर उपाश्रय, स्थानक भी हैं। इस मंदिर की प्रतिष्ठा संवत् 2041 दिनांक 3.05.1985 को श्री जितेन्द्रविजय जी म.सा. द्वारा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) पिंक पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

इन तीनों प्रतिमाओं पर **2040 पोष कृष्णा 5 का लेख है।** वेदी की दीवार के मध्य में प्रासाद देवी की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1. श्री नेमिनाथ भगवान की चतुर्विशंति 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2040 का लेख है।
2. श्री महावीर भगवान की 10.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2040 का लेख है।
3. श्री वासुपूज्य भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2053 का लेख है।
4. श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा है।
5. श्री सिद्धचक्र यंत्र ताम्बे का 6.5'' x 3.5'' का है। इस पर कोई लेख नहीं है।
6. श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' गोलाकार है। इस पर संवत् 2040 का लेख है।
7. श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3.5'' का है। इस पर संवत् 2040 का लेख है।
8. श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3'' का है। इस पर संवत् 2040 का लेख है।

श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2040 का लेख है। उपाश्रय बना हुआ है।

वार्षिक ध्वजा वै. शु. 13 को चढ़ाई जाती है।

इसकी देखरेख समाज द्वारा की जाती है जिसके अध्यक्ष श्री हीरालाल जी दोशी है।

सम्पर्क सूत्र - 01472-241018

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, चित्तौड़गढ़ (रेल्वे स्टेशन)

यह उत्थापित देरासर है। इसकी स्थापना जैन गुरूकूल में सन् 1989 में हुई और मंदिर प्रतिमा परिकर आदि सभी धातु के है।

मंदिर में निम्न धातु की प्रतिमाएँ विराजमान है :

1. श्री मुनिसुव्रत भगवान की 10'' परिकर सहित 18'' व मंदिर तक 37'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर संवत् वि.सं. 2042 माघ कृष्णा 2 का लेख है।

अन्य प्रतिमाएँ :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर दिनांक 9.1.2002 का लेख हैं।
2. श्री सुविधिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर संवत् 1524 आषाढ़ सुदि 9 का लेख हैं।
3. श्री आदिनाथ भगवान की 6.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा हैं। इस पर संवत् 1466 आषाढ़ सुदि 9 का लेख हैं।
4. श्री जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर कोई लेख नहीं है।
5. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.7'' ऊँची (परिकर सहित) प्रतिमा हैं।
6. श्री देवी की 2'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

7. श्री नमिनाथ भगवान की चर्तुविशति 11'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर संवत् 1593 ज्येष्ठ सूदि 3 गुरूवार का लेख हैं।

8. श्री सिद्धचक्र यंत्र 6'' का गोलाकार है। इस पर माघ सुदि 5 का लेख है।

रेल्वे स्टेशन के पास जैन गुरूकूल है, जैन धर्मशाला है, भोजनशाला है। इसके पीछे जमीन है। इसकी देखरेख गुरूकूल के सदस्य द्वारा की जाती है।

गुरूकुल की स्थापना सन् 1945 में आचार्य श्री नीतिसुरीश्वर जी म.सा. के सदुपदेश से की गई। पूर्व में यह गुरूकुल किराये के भवन में संचालित रहा तत्पश्चात् वर्तमान भवन जो सहयोग द्वारा निर्मित है उसमें संचालित है। श्री नीतिसुरीश्वर जी म. सा. चित्तौड़ जिर्णोद्धारक एवं समाज सुधारक थे ।

समाज की ओर से सम्पर्क सूत्र - श्री हीरालाल जी दोशी, फोन 01472-241018

कुदरत का नियम ऐसा है कि प्रत्येक को अपनी जरुरत के अनुसार सुख मिल ही जाता है। जिसने जो 'टेन्डर' भरा है, वह पूरा होता ही है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर – घोसुण्डा

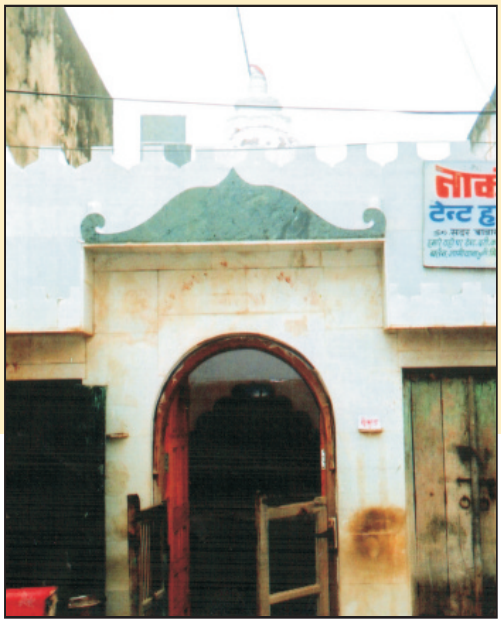

यह शिखरबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यहाँ रेल्वे स्टेशन है। यह ग्राम 2000 वर्ष प्राचीन है और मंदिर 700 वर्ष प्राचीन बतलाते हैं। प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर भी सही प्रतीत होता है। बाहर की ओर स्वागत करते हुए दो हाथी बने हैं। पूर्व में ग्राम में 200 जैन परिवार थे अब केवल तीन परिवार रहते हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1717 शाके 1582 पोष सुदि 13 का लेख महाराजा करणसिंह जी के राज्यकाल का है।

2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। **यह प्रतिमा पूर्व में उपाश्रय में थी। इसके नीचे संवत् 1335 का लेख है।**

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

1 श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1570 का लेख है।

2 श्री सुमतिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 1616 वैशाख सुदि 6 का लेख है।

3 श्री सम्भवनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1893 माघ सुदि 10 का लेख है।

मंदिर के साथ 12 बीघा जमीन है जो पुजारी के पास है तथा **दो दुकाने हैं** जो समाज के सदस्यों के पास हैं। इससे प्राप्त नकद राशि से ही मंदिर का व्यय होता है।

वार्षिक ध्वजा पोष वदि 10 को चढ़ाई जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्री मदनलालजी अम्बालालजी सेठ
फोन : 01474-227189,
श्री दिनेश जी जैन, मोबाइल : 98295 66135

'मेरा क्या होगा?' कहा कि बिगड़ गया।
इसका अर्थ यह है कि आपकी दृष्टि
में 'आत्मा' की गणना ही नहीं है।
भीतर अनन्त शक्ति माँगिए न !

श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर, सावा

यह प्राचीन मंदिर चित्तौड़गढ़ से 10 किलोमीटर दूर है। उल्लेखानुसार पूर्व में इस मंदिर का निर्माण संवत् 1700 के लगभग का बताया गया है और प्रतिमा पर भी सं. 1699 उत्कीर्ण है। वि. की 16वीं शताब्दी में गांव में जैन परिवार के 365 घर थे। इसलिए सावा का नाम शाहवास था, बाद में अपभ्रंश होकर सावा कहलाने लगा।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

1. श्री अजितनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1699 वैशाख शुक्ला 9 का लेख है।
2. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) धातु की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
3. श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक के बाएं) धातु की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

वेदी की दीवार के बीच प्रासाद देवी स्थापित है।

दोनों ओर आलिओं में :

1. श्री महायक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री अजितबाला यक्षिणी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाए व यंत्र :

1. श्री शांतिनाथ भगवान की चतुर्विंशति 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 15.02.09 का लेख है।
2. श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।
3. श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1628 का लेख है।
4. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1662 का लेख है।
5. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है।
6. श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' x 2.5'' का है। इस पर संवत् 2065 का लेख है।

सभामण्डप में :

1. श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2044 ज्येष्ठ शुक्ला 2 का लेख है।
2. श्री माणिभद्र की स्थानीय पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। मंदिर का जिर्णोद्धार होकर प्रतिष्ठा 29 मई 1987 को ज्येष्ठ सुदि 2 को सम्पन्न हुई। मंदिर के सामने **उपाश्रय बना** हुआ है व इसकी **8 बीघा जमीन** है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ सुदि 2 को चढ़ाई जाती है। समाज की ओर से देखरेख श्री कन्हैयालाल जी चावत करते हैं।

सम्पर्क सूत्र - 01472-223023

श्री शांतिलाल जी पीतलिया, मोबाइल : 99280 50819